ISSN 0970-9312

प्राथमिक शिक्षक

शैक्षिक संवाद की पत्रिका

वर्ष 44 अंक 1 जनवरी 2020

प्राथमिक शिक्षक

वर्ष 44 | अंक 1 | जनवरी 2020

इस अंक में

संवाद 3

लेख

1.	भारत के दक्षिण क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा पाठ्यपुस्तकों में दृश्य चित्रण का अध्ययन	रमेश कुमार	5
2.	संस्कृत अध्यापन कौशल विकास में नवीन तकनीक की भूमिका	उषा शुक्ला	14
3.	वाह! क्या दिन हैं?	सरोज यादव	20
4.	कहानियाँ और साझा लेखन	रजनी	24
5.	गणित में गलतियों से सीखने के अवसर	शिल्पा जायसवाल रूही फातिमा	28
6.	सामाजिक विज्ञान विषय की उपलब्धि पर आगमनात्मक प्रशिक्षण प्रतिमान की प्रभावशीलता	शिरीष पाल सिंह दीपमाला	35
7.	बच्चों की शिक्षा में माता-पिता एवं अभिभावकों की भूमिका	नरेश कुमार	48
8.	सामाजिक सरोकार के मुद्दे और विद्यालय की अधिगम-संस्कृति	ऋषभ कुमार मिश्र रवनीत कौर	56
9.	आम के बाद गुठली आती है!	उषा शर्मा	64
10.	कहानी निर्वाचन का शैक्षिक महत्व	तनुजा मेलकानी शुभ्रा पी. काण्डपाल	76

© NCERT not to be republished

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं—

तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।
उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से

8

सामाजिक सरोकार के मुद्दे और विद्यालय की अधिगम-संस्कृति

ऋषभ कुमार मिश्र*
रवनीत कौर **

यह लेख नई तालीम के सिद्धांत पर संचालित आनंद निकेतन विद्यालय के वृत्त अध्ययन पर आधारित है। इस पर विद्यालय में सामुदायिक-स्थानीय समस्याओं को विद्यालयी पाठ्यचर्या का अंग बनाया जाता है। इस दौरान विद्यार्थियों और शिक्षकों को प्रत्यक्ष भागीदारी द्वारा वास्तविकता समस्याओं को समझने का अवसर दिया जाता है। स्कूल, शिक्षक, विद्यार्थी और समुदाय के लोग सीखने की प्रक्रिया में शामिल रहते हैं। यह लेख विवेचना करता है कि ये संलग्नताएं कैसे विद्यार्थियों को विषय ज्ञान देने के साथ-साथ बदलाव का कर्ता बनाती हैं? कैसे उन्हें विकल्पों को खोजने और हस्तक्षेपों को धरातल पर उतारने का साहस देती हैं?

अकसर सुझाया जाता है कि सामुदायिक-स्थानीय समस्याओं को विद्यालयी पाठ्यचर्या का अंग बनाना चाहिए लेकिन इस तरह के बहुत कम प्रयोग देखने को मिलते हैं। कक्षा में हमारा ज़ोर विषय ज्ञान को बताने पर या कुछ गतिविधियों के माध्यम से संकल्पना की जटिलता को सरल करके प्रस्तुत करना होता है। यदि उदाहरण के तौर पर, सामुदायिक स्थानीय समस्याओं का ज़िक्र भी होता है तो उसे विषयज्ञान अनुप्रयोग के स्तर तक सीमित रखा जाता है। इस संदर्भ में हमारी शिक्षणशास्त्रीय मान्यता होती है कि जब विद्यार्थी सूचनाओं को जानते हैं तो वे समस्या 'समझने' लगते हैं। जब उन्हें समस्या समझ में आ जाती है तो विद्यार्थी जागरूक भी हो जाते हैं। विद्यार्थियों की जागरूकता उन्हें समस्या के समाधान के लिए अभिप्रेरित करती है। 'पर्यावरण प्रदूषण' 'जल संकट का निवारण' जैसे विषयों पर बच्चे रचनात्मक निबंध तो लिख लेते हैं लेकिन अपने आसपास और रोज़मर्रा के जीवन में खुद की भूमिका के प्रति सचेत हों ऐसा आवश्यक नहीं है। तो क्या करें? इसका एक उपाय 'आनंद निकेतन'[1] विद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयोगों में देखने को मिलता है। इन प्रयोगों की सैद्धांतिक जड़ें निर्माणवाद-आधारित खोज विधि, आलोचनात्मक

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र*
** *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, माता सुंदरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली*
[1]वर्धा ज़िले के सेवाग्राम परिसर में स्थित विद्यालय जो नई तालीम के सिद्धांतों पर संचालित है। यहाँ आसपास के गाँवों के करीब 300 विद्यार्थी पढ़ने आते हैं।
नोट– यह कार्य रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अनुदानित शोध परियोजना के अंतर्गत पूर्ण किया गया है।